सभ्यता और संस्कृति

सभ्य आदमी समूह में मिलकर नहीं गाते
समूह में मिलकर नहीं नाचते
समूह में मिलकर समय नहीं गंवाते
सभ्य आदमी अकेले रहना पसन्द करते हैं
सभ्य आदमी समूहों में नहीं पाए जाते

पिछड़े हुए लोग समूहों में मिलकर गाते हैं
समूहों में मिलकर नाचते हैं
समूहों में मिलकर समय बिताते हैं
पिछड़े हुए लोग समूहों में पाए जाते हैं

पिछड़े हुए लोग सभ्य आदमियों के लिए विज्ञापन होते हैं
वे उनके घरों की सजावट के लिए
सुन्दर-सुन्दर वस्तुएं बनाते हैं
जब पिछड़े हुए लोग समूहों में नाचते-गाते हैं
तो सभ्य आदमी उन्हें देख-देखकर तालियां बजाते हैं

पिछड़े हुए लोग पुश्त-पुश्त
संस्कृति के वृक्षों की रखवाली करते हैं
सभ्य लोग संस्कृति के पके हुए फल खाते हैं

सभी जानते हैं
सभ्यता सभ्य लोगों से जानी जाती है
और सभ्य लोग पिछड़े हुए से जाने जाते हैं
इस तरह सभ्यता और संस्कृति के हित में
दोनों को अलग-अलग बनाए रखना
देश की विवशता है।

भगवत रावत
हिन्दी के वरिष्ठ कवि
129 आराधना नगर, भोपाल-462003